515

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-8

(प्रश्न पत्र-II)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

DTVF / OPT-24 **HL-2408**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): आनंद कुमार मीना

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [✓] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): HL - 2408

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	2	5	6	6	3

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'एक दुनिया समानांतर' (राजेन्द्र यादव) नई कहानी संकलन ~~से उद्धृत है~~ की कहानी 'एक नाव के यात्री' से उद्धृत है। इन पंक्तियों में आधुनिक मानव के लघुमानववाद के भाव एवं मोह के मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया गया है।

भावार्थ

~~शहरी~~ शहरी मध्यवर्ग की समस्या नई कहानी की कथावस्तु का केंद्र है जिसमें बदलती परिस्थितियों के साथ टूटते संबंधों एवं उभरते निरर्थकताबोध को दर्शाया जाता है। इन पंक्तियों में भी एक ~~[illegible]~~ पत्नी के मन में संबंधों के लेकर मन में उपजे विचारों के

उम्मीदवार को इस हाशिये मे नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ इसकी महिला समझा रही है कहती है कि हमारा जिस व्यक्ति से लगाव रहता है उसमें कमियाँ होने के बावजूद हम उससे दूर नहीं हो पाते।

विशेष

① प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग

② सहज सरल खड़ी बोली।

③ उभरते यौगिकतावाद एवं निरर्थकताबोध को दिखाया गया है

④ मनोवैज्ञानिक सत्य उभरा है

⑤ लघुमानववाद उभरा है

⑥

(ख) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

प्रेमचंद अपनी रचनाओं में बदलते युग के यथार्थ को बेलौस ढंग से प्रस्तुत करते हैं। 'गोदान' उपन्यास (1936ई.) से उद्धृत इन पंक्तियों के माध्यम से मिस मालती पूँजीवाद के प्रभावों को उजागर कर रही हैं।

व्याख्या

मिस मालती कहती हैं कि पूँजीवाद समाज में पैसा सभी सांस्कृतिक-सामाजिक तत्वों में केंद्र में रखता है जिसके कारण हम मानवीय मूल्यों को भूल स्वार्थ व लालच के वशीभूत होकर कार्य करते हैं। वह खुद का उदाहरण

देकर डॉक्टर जैसे मानव कल्याणकारी पद के पीछे छिपी स्वार्थलोलुपता को दिखाती है

विशेष

1. गोबर भी यही मानता है कि ~~मिस्टर पाव~~ धन के सामने बिरादरी व धर्म हेय है

2. हिंदुस्तानी भाषा का प्रयोग

3. यथार्थवाद नग्न रूप में प्रस्तुत हुआ है

4. प्रेमचंद चरित्र अनुसार भाषा प्रयोग करते हैं मिस मालती की भाषा में तत्समता है

5. 'नयी सभ्यता' के प्रतीकात्मक रूप से कई अर्थ प्रस्तुत करता है

6. चित्रात्मक भाषा

(ग) कला केवल उपकरण मात्र है, कला जीवन के लिये और उसकी पूर्ति में ही है। जीवन से विरक्ति और जीवन के उपकरण से अनुराग का क्या अर्थ?... किसी का जीवन अन्य की तृप्ति और जीवन की पूर्ति का साधन मात्र होकर रह जाय? वह जीवन सृष्टि में अपनी सार्थकता से सृष्टि में नारी के जीवन की मौलिक सार्थकता से वंचित रह जाय? जैसे सेवा के साधन दास का जीवन!... भयंकर प्रवंचना!

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

यशपाल ने 'दिव्या' उपन्यास में मानववादी मूल्यों का प्रक्षेपण किया है। 'दिव्या' से उद्धृत इन्हीं पंक्तियों में मारिश रत्नप्रभा को कला की उपयोगिता को जीवन से जोड़कर देखने की बात कह रहे हैं।

भावार्थ

मारिश रत्नप्रभा से कहते हैं कि कला जीवन की पूर्ति का केवल एक माध्यम है ना कि संपूर्ण जीवन। पश्चिम में कांट ने अपने 'केटेगोरिकल इम्परेटिव' में कहा है कि मानव स्वयं में साध्य है ना कि साधन। इसी प्रकार मारिश भी कह रहे हैं कि नारी

के लिए कला को स्वीकारना स्वयं में जीवन की उपलब्धि या होकर साधन मात्र है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विशेष

1. प्रेमचंद ने भी 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' निबंध में कला की उपयोगिता को तराजू पर तौला है।
2. यशपाल नारी जीवन की सार्थकता स्थापित करने हेतु साहित्य के माध्यम से मानववादी मूल्यों को प्रक्षेपित करते हैं।
3. ऐतिहासिक आवरण अनुसार तत्सम प्रधान भाषा।
4. यहाँ मार्क्सवादी मूल्य भी ध्वनित हो रहे हैं जो नारी को बराबर का दर्जा देने की बात करता है।

(घ) कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुखमंडल आदि के सौंदर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदारता, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौंदर्य भी मन में जमाती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सौंदर्य एवं प्रेम

प्रस्तुत पंक्तियाँ आचार्य शुक्ल के निबंध 'कविता क्या है' से उद्धृत हैं जिसका संकलन 'चिंतामणि' निबंध संग्रह में किया गया है। इसमें कविता के महत्व को बताया जा रहा है।

व्याख्या

आचार्य शुक्ल कह रहे हैं कि कविता मात्र शारीरिक विशेषताओं का वर्णन मात्र न होकर मानवीय भावों की अभिव्यक्ति है। कविता बाह्य सौंदर्य के साथ-साथ आंतरिक सौंदर्य को भी उजागर करती है।

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विशेष

① रीतिमुक्त काव्यधारा के घनानंद भी रीतिकालीन काव्य की इसी आधार पर आलोचना करते हैं— "ढेल सो बनाय आए मेलत सभा के बीच"

② 'स्कंदगुप्त' नाटक में भी कविता को सुख व दुख में सामंजस्य करने वाला बताया है।

③ तत्सम बाहुल्य युक्त खड़ी बोली

④ आचार्य शुक्ल ने अपने निबंधों में नया 'काव्यशास्त्र' रच डाला है।

⑤ वर्तमान समय में भी मज्ज कुछ 'लाइक्स' के लिए कविता रचने वाले 'यूट्यूब इन्फ्लुएंसर' ने कविता कर्म को कुछ हद तक मैला किया है।

(ङ) अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते हैं। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम अगोचर जैसी चीज है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा 'ऐड्रिलिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जाएगा। ... दिल वह मंदिर है जिसमें आदमी के अंदर का देवता बास करता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

फणीश्वरनाथ रेणु 'मैला आँचल' जैसे आँचलिक उपन्यासों में भी मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हैं। इसी उपन्यास से उद्धृत व्याख्येय पंक्तियों में भी डॉ. प्रशांत के बारे में यह बात कही गई है

व्याख्या

डॉ. प्रशांत समाज कल्याण के भाव से अपनी रिसर्च को पूरा करने के लिए मेरीगंज गाँव में आते हैं और पाते हैं कि ग्रामीण अंचल में लोगों में जो सहृदयता है वह अनुकरणीय है। वे कहते हैं कि हमारे अंदर जो ~~और~~ अंतरात्मा है

दृष्टि
The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

है वहीं हमें जानवरों से भिन्न करती है अतः जरूरी है कि उस मन या अंतरात्मा को संभालकर रखा जाए

विशेष

1. रेणु पात्र अनुसार भाषा का प्रयोग करते हैं। डॉक्टर के अनुरूप 'हेड्रोलिन' जैसे अंग्रेजी शब्द का प्रयोग इसका प्रमाण है।

2. डॉ. प्रशांत की रिसर्च अंत में इसी मन के पहचान लेने के कारण सफल हो जाती है।

3. आँचलिक प्रभाव में 'वास' 'बास' बन गया है।

4. हार्ट, दिल जैसे समान दिखने वाले शब्दों की अर्थ भिन्नता प्रकट हो रही है।

2. (क) 'गोदान' उपन्यास के 'होरी' और 'गोबर' की तुलना करते हुए बताइए कि आपके मत में इनमें से कौन संभावनाशील चरित्र है? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रेमचंद उपन्यास के चरित्रों का वर्णन मात्र नहीं मानते हैं। उनका मानना है कि यथार्थ को शुद्ध रूप में दिखाने के लिए चरित्र ही सबसे महत्वपूर्ण माध्यम/साधन है।

'गोदान' में तो उन्होंने 'होरी' और 'गोबर' नामक चरित्रों के माध्यम से दो भिन्न आकांक्षाओं, मूल्यों, आदर्शों एवं विचारों को प्रक्षेपित किया है।

संभावनाशीलता के प्रतिमान पर देखा जाए तो 'गोबर' का चरित्र 'होरी' की अपेक्षा भारी पड़ता है। इसके निम्न बिंदु हैं—

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मैं समझा जा सकता है –

① सर्वप्रथम जहाँ होरी का चरित्र नियतिवादी है वहीं गोबर अपनी किस्मत खुद लिखने में विश्वास करता है। होरी कहता है –

"छोटा-मोटा सब भगवान के घर से बनकर आते हैं।"

② वहीं दूसरी ओर गोबर बदलती परिस्थितियों के अनुसार धन के महत्व को स्वीकारता है। इसी कारण वह धन के सामने बिरादरी को हेय मानता है।

③ तीसरा कारण है, होरी धर्म और बिरादरी के दलदल में इस तरह

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

फैल हुआ है कि चाहकर भी उससे बाहर नहीं निकल पाता। वह कहता है - "मरने के बाद बिरादरी ही मिट्टी लगाएगी या।"

लेकिन गोबर धार्मिक आडंबर को समझता है इसीलिए कहता है - "पाप का धन कैसे पचे इसीलिए दान-धर्म करना पड़ता है।"

(4) अगला कारण है, गोबर किसानी को छोड़ मज़दूरी करना गलत नहीं मानता। वह लचीला है जो वक्त की माँग के अनुसार बदलना जानता है।

(5) हालाँकि अतिउत्साह जैसी कुछ कमियाँ उसके चरित्र में दिखती है लेकिन

जीवन संघर्ष के थपेड़ों की मार खाकर वह भी यथार्थ के धरातल पर आ जाता है।

उसके चरित्र की कुछ अन्य विशेषताएँ भी उसे संभावनाशील बनाती हैं जैसे - शहर जाते समय दम्पति में सुलह का प्रयास, शहर में जी-तोड़ मेहनत करना, साहसी होकर रसीद माँगना इत्यादि।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि गोबर का चरित्र नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने के कारण कहीं अधिक संभावनाशील है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में नई कहानी की विशेषताएँ किस रूप में दिखाई देती हैं? प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कमलेश्वर नई कहानी आंदोलन के दौर के रचनाकार हैं. और उनकी कहानियाँ 'नई कहानी' की विशेषताओं को पर्याप्त मात्रा में दर्शाती हैं।

'खोई हुई दिशाएँ' में इन विशेषताओं के निम्न रूपों में देखा जा सकता है →

(1) **अजनबीपन की समस्या**

चन्दर राजधानी दिल्ली में यांत्रिकता व शहरीकरण से उपजे अजनबीपन से परेशान है। वह कहता है - दिल्ली संपूर्ण भारत की राजधानी है पर पूरे शहर में कोई अपना नहीं

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

② पहचान का संकट

चन्दर इसी पहचान के संकट से ग्रस्त है। यहाँ तक कि बस का कंडक्टर भी पहचानने का नाटक करता है लेकिन वास्तव में नहीं पहचानता (टिकट प्रसंग)

③ निरर्थकताबोध

चंदर शहरी जीवन की अतिभौतिकता से उपजे निरर्थकताबोध से ग्रस्त है यहाँ तक कि वह अपनी पत्नी को रात में जगाकर पूछता है कि "तुम मुझे पहचानती हो न?"

④ रिश्तों में खोती भावुकता

आनंद नामक दोस्त मात्र पैसे उधार लेने के उद्देश्य से दोस्ती रखता है।

दृष्टि
The Vision

(5) शिल्प के स्तर पर खुरसान सड़कें प्रतीकात्मक रूप से मन के सूनेपन को दर्शाती हैं।

(6) अन्य भाषाओं के शब्दों का बेधड़क प्रयोग। -

पंजाबी -> ओ बारस्थाइ्ञा की हाल है?

अंग्रेजी -> इनसोंलिरिव

(7) यहाँ तक कि कहानी का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है और नई कहानी की केंद्रीय समस्या लघुमानववाद व निरर्थकताबोध को दर्शाता है।

इस प्रकार खोई हुई दिशाएँ नई कहानी का जीवित दस्तावेज़ है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास में इतिहास किस रूप में उपस्थित है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यशपाल 'दिव्या' उपन्यास में ऐतिहासिक वातावरण का प्रयोग मानववादी मूल्यों एवं नारी के महत्व को स्थापित करने हेतु करते हैं।

यशपाल ने उपन्यास के प्राक्कथन में ही लिखा है- इतिहास विश्वास की नहीं विश्लेषण की वस्तु है।

अतः स्वाभाविक है कि उन्होंने इतिहास का प्रयोग उपयोगितावादी दृष्टि से किया है। उन्होंने दिव्या में बौद्धकालीन

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

शासन प्रणाली, सामाजिक - राजनीतिक व्यवस्था, धार्मिक तत्वों को दिखाने के लिए इतिहास से कुछ तत्व ग्रहण एवं घटनाएँ ग्रहण की हैं। जैसे - महाश्रेष्ठी, महाबलाधिकृत, सेनापति व आदि शब्दों का प्रयोग।

इसके अतिरिक्त तत्कालीन समय में बौद्ध धर्म के स्वरूप, अन्य धार्मिक सम्प्रदायों जैसे आजीवक, वर्णाश्रम - वैदिक धर्म आदि को भी कुशलता से चित्रित किया है।

लेकिन ये सभी प्रयास उनके रचनाकर्म के साधन मात्र हैं। उनकी रचना का उद्देश्य आधुनिक नारी की समस्याओं को सभी काल खंडों

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

में दिवाना है।

'दिव्या' का मधुपर्व में कुलीन कन्या से 'दारा' नामक दासी बनना और फिर अंत में 'अंशुमाला' बन नृत्यांगना बनना नारी-व्यथा को उजागर करता है और उसी को समर्पित करते हुए यशपाल ने लिखा है -

तुमको - - .
निरंतर पराभव एवं अभिशाप सहकर भी
जिसका जीवन-दीप स्नेह से प्रज्वलित है

इस प्रकार 'दिव्या' उपन्यास में ~~महत्व~~ इतिहास साहित्यिक उपकरण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

3. (क) अज्ञेय के निबंध 'संवत्सर' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दृष्टि
The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रेमचंद सामाजिक यथार्थ को उजागर करने हेतु अपने चरित्रों के मनोविज्ञान को प्रकाश में लाते हैं क्योंकि कोई भी चरित्र वास्तविकता में एक संपूर्ण वर्ग की मानसिकता को दर्शाता है।

1) बाल मनोविज्ञान

'ईदगाह' का 'हामिद' व अब्दुल का संवाद बाल मनोविज्ञान को दर्शाता है। हामिद का बाल मन खिलौनों की तरफ आकर्षित तो होता है लेकिन बूढ़ी अम्मा के जलते हाथों की स्मृति से पल-भर में युवा हो जाता है। यही 'ईश्वर के दाम' में 'मंगल' में देखा जा सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

2) **नारी मनोविज्ञान**

'अलग्योझा', 'गिला', 'बड़े घर की बेटी' जैसी कहानियों में नारी के आभूषण प्रेम, संवेदनशील मन, प्रेम की चाह जैसे मनोविज्ञान को दर्शाया है यथा "आनंदी स्त्री स्वभावानुसार रोने लगी।"

3) **वृद्ध मनोविज्ञान**

चाहे 'बूढ़ी काकी' हो या 'ईदगाह', वृद्ध लोगों के मन की परतें प्रेमचंद ने बखूबी खोली है। प्रेमचंद लिखते हैं-

"बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।"

4) **दलित मनोविज्ञान**

दलित समुदाय में शोषण फलस्वरूप

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उपजी हीनता ग्रंथि को 'सद्गति' 'दूध का दाम' जैसी कहानियों में बखूबी उजागर किया है-
"यही है ब्राह्मण के घर में पैर रखने का फल।"

⑤ गरीबों का मनोविज्ञान

'कफन' के घीसू-माधव कफन के पैसों से पूड़ी खाते हैं क्योंकि उनके लिए भूख से बड़ा सत्य कुछ नहीं है।

⑥ किसानों का मनोविज्ञान

'सवा सेर गेहूँ' 'पूस की रात' जैसी कहानियों में किसान की सहज मनोहारि को उजागर किया गया है।

इस प्रकार प्रेमचंद संपूर्ण समाज के लोगों की मानसिक दशा व सोच को सहज के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

(ग) उपन्यास-कला की दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास का अवलोकन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'महाभोज' मन्नू भंडारी द्वारा वर्ष 1979 ई. में लिखा गया उपन्यास है जिसमें राजनीतिक विद्रूपताओं को यथार्थ रूप में उकेरा गया है।

1) कथानक / कथावस्तु

महाभोज का कथानक बेलछी कांड (1978) से लिया गया है जिसमें दलित समाज के 13 लोगों को ज़िंदा जला दिया गया था बिसू उसी घटना के सबूत इकट्ठा करता है लेकिन ज़ोरावर द्वारा उसे मार दिया जाता है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

2) देश- काल - वातावरण

वर्ष 1978 व उसके बाद का काल दिखाया है लेकिन काल सापेक्ष घटनाओं का अभाव है (बेलछी कांड के अतिरिक्त) देश एवं वातावरण के स्तर पर कुछ विशेष सूचनाएँ उपलब्ध नहीं करवाई गई है।

3) चरित्र

दा साहब, सुकुल बाबू, मि. सक्सेना, बिंदा जैसे चरित्रों को पर्याप्त महत्व दिया है एवं राव, चौधरी, काशी, जोरावर बाबू जैसे चरित्र सहायक बनकर उभरे है।

लेकिन चरित्रों की भीड़ नहीं जुटाई है और अनुपातिक

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

महत्त्व भी ठीक है।

(4) शिल्प के स्तर पर भी मन्नू भंडारी ने पात्रानुसार भाषा का ध्यान रखा है। दा साहब जैसे चरित्र जहाँ पृष्ठभूमि के कारण तत्सम शब्द प्रयोग में लाते हैं तो बिंदू के पिता ग्रामीण भाषा-

'रात भई कलपत- कलपत करें सरकार।"

इसी प्रकार 'खतरनाक लपकती अग्निलीक' जैसे प्रतीकों का प्रयोग उभरती चेतना को दर्शाती है।

4. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दृष्टि
The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक के रचना-उद्देश्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दृष्टि
The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'चिन्तामणि' के निबंधों में प्रौढ़ चिन्तन, सूक्ष्म विश्लेषण और तर्कपूर्ण विवेचन का चरम आदर्श लक्षित होता है। विवेचन कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खण्ड - ख

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहाँ नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

संदर्भ एवं प्रसंग

व्याख्येय पंक्तियाँ डॉ. सत्येन्द्र द्वारा संकलित निबंध संग्रह 'निबंध निलय' से ली गई है जिन्हें अज्ञेय ने रचा है। इन पंक्तियों में अज्ञेय ने 'प्रश्न की सार्थकता' को व्याख्यायित करने का प्रयास किया है।

व्याख्या

इन पंक्तियों में मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति को उजागर किया गया है। अज्ञेय कहते हैं कि चिंतन का पहला पैमाना यही है कि हम

दृष्टि
The Vision

हमेशा जिज्ञासु बने रहें। एक बच्चे की तरह हम अबोध बनकर प्रश्न करते रहें तो ही हमारी सार्थकता है।

विशेष

1. पाश्चात्य दार्शनिक सुकरात ने कहा है
"I cannot teach them anything. I can only teach them to think."

2. अज्ञेय अपनी रचनाओं में सर्जना हेतु स्वत्व के विलयन को महत्वपूर्ण मानते हैं ('असाध्य वीणा')। यहाँ भी यही भाव है।

3. सांस्कृतिक अभिजात्यवादी होने के कारण तत्सम बाहुल्य खड़ी बोली

4. गद्य में भी लयात्मकता है

5. आधुनिक मानव के लिए नए आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं।

6. वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्रश्न पूछने की जिज्ञासा के बजाय रटंत पर आधारित हो रही है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

यशपाल 'दिव्या' उपन्यास में मारिश के माध्यम से मनुष्य की जिजीविषा को उजागर करते हैं। 'दिव्या' से भी मारिश उद्धृत इन पंक्तियों में भी मारिश 'दिव्या' से इस जिजीविषा का महत्त्व बतला रहे हैं।

व्याख्या

'दिव्या' अपने युग के खोने एवं अपने जीवन की दुर्गति के कारण निराशाबोध से भर जाती है। तब मारिश उन्हें कहते हैं कि जीवन का महत्व असफल न होने में नहीं बल्कि निरंतर प्रयास में ही मनुष्य असीम संभावनाओं से युक्त होने

के कारण कभी हार नहीं मान सकता।

विशेष

1. "एक और ज़िंदगी" कहानी में भी लेखक मोहन राकेश यही लिखते हैं कि जीवन के एक प्रयास को असफलता को हम संपूर्ण जीवन की असफलता क्यों मान लेते हैं?

(2) 'दिव्या' के पात्रकथन में महर्षि वाल्मीकि का कथन है - "न मनुष्यात् श्रेष्ठतर हि किंचित."

(3) तत्सम बाहुल्य खड़ी बोली

(4) भाषा में लयात्मकता है

(5) मारिश के रूप में यशपाल स्वयं उपस्थित हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) हमने एक दूसरा उपाय सोचा है, एडूकेशन की एक सेना बनाई जाय। कमेटी की फौज। अखबारों के शस्त्र और स्पीचों के गोले मारे जायँ। आप लोग क्या कहते हैं?

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

व्याख्येय गद्यांश 'भारत दुर्दशा' (1875) नाटक से उद्धृत है जिसकी रचना भारतेंदु हरिश्चंद्र ने की है। इन पंक्तियों में 'भारत' की दुर्दशा पर व्यंग्य किया गया है।

व्याख्या

प्रतीकात्मक रूप से यहाँ भारत की दुर्दशा के लिए सत्यनाश फौजदार जैसे लोगों द्वारा योजना बनाई जा रही है।

विशेष

1. आरंभिक खड़ी बोली जिसमें

दृष्टि The Vision

अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग
उदा. एजुकेशन।

(2) प्रतीकात्मक भाषा

(3) व्यंग्य का प्रयोग

(4)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(घ) तुम्हारे दुख की बात भी जानती हूँ। फिर भी मुझे अपराध का अनुभव नहीं होता। मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिये वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है...।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग

~~प्रस्तुत~~ आधुनिक नाटक के प्रणेता मोहन राकेश के आषाढ़ का एक दिन' में मल्लिका के माध्यम से पुरुरवा के प्रेम को दर्शाया है।

उपरोक्त पंक्तियों में कालिदास के प्रति अपनी प्रेम भावना को मल्लिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या

मल्लिका अपनी माँ अम्बिका से कहती है कि मेरा कालिदास से संबंध शारीरिक न होकर आत्मिक है मैं भावना के स्तर पर कालिदास से

दृष्टि The Vision

अपना चुकी है।

विशेष

1. तत्सम बाहुल्य खड़ी बोली।
2. इन पंक्तियों में हम माँ एवं पुत्री का पीढ़िगत अंतराल देखा जा सकता है।
3. 'है' की पुनरावृत्ति कथ्य की मार्मिकता को बढ़ा रही है।
4. ऐसा ही प्रेम 'स्कंदगुप्त' की देवसेना का स्कंदगुप्त के प्रति देखा जा सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एव प्रसंग

व्याख्येय पंक्तियाँ मार्क्सवादी उपन्यासकार यशपाल के 'दिव्या' उपन्यास से अवतरित है जिनमें बौद्ध धर्म का जीवन के प्रति नज़रिया दिव्या को संबोधित करते हुए बताया गया है।

व्याख्या

बौद्ध श्रमण दिव्या से कहते है कि सुख और दुख तो जीवन के हिस्सा है और इन दोनों का कारण मनुष्य की इच्छा है अतः इच्छा का त्याग ही वास्तविक सुख की प्राप्ति करवा सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

विशेष

(1.) बौद्ध धर्म के दर्शन का प्रभाव जिसमें ① निवृत्ति मार्ग में ही मोक्ष प्राप्ति का साधन माना है

(2) तत्कालीन साहित्य जैसी बोली उस समय के ऐतिहासिक वातावरण को प्रस्तुत कर रही है

(3) उपदेशात्मक भाव अभिव्यंजित हो रहा है

6. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रेमचंद न तो अतीत का गौरवगान करते हैं न ही चमचमाते भविष्य की कल्पना। वे तो बेलौस होकर वर्तमान के यथार्थ का विश्लेषण करते हैं।

इसी संदर्भ में प्रेमचंद ने गोदान में संपूर्ण भारत के जीवन को अभिव्यक्ति दी है जिसमें ग्रामीण कथा क्रम में ही शहरी कथा भी बीच-बीच में अपना महत्व स्थापित करती रही है।

प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथ के समावेश के निम्न संभावित कारण हो सकते हैं —

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1) तत्कालीन भारतीय समाज को संपूर्णता में प्रस्तुत करना।

2) गोदान को महाकाव्यात्मकता प्रदान करने हेतु जीवन के संपूर्ण यथार्थ को प्रस्तुत करना जैसा कि रामचरितमानस में किया गया है।

3) ग्रामीण एवं शहरी जीवन के कंट्रास्ट को दिखाना।

4) किसान (ग्रामीण) एवं मजदूर (शहरी) के बीच का अंतर दिखाना।

5) तत्कालीन ग्रामीण एवं शहरी जीवन की समस्याओं में अंतराल को

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दिखाना।

उन सभी कारणों में सर्वाधिक प्रबल कारण है तत्कालीन ग्रामीण एवं शहरी जीवन की मूलभूत समस्याओं में समता एवं अंतराल को दिखाना। उसकी प्रबलता के निम्न कारण हैं-

1) प्रेमचंद दिखाना चाहते हैं कि ग्रामीण लोग 'मेहनत की दुनिया' में रहने के बावजूद गरीबी, भुखमरी, ऋणग्रस्तता जैसी मूलभूत समस्याओं से पीड़ित हैं जबकि 'मुनाफे की दुनिया' (शहरी) के लोग कम मेहनत में अधिक पैसा कमा कर जी रहे हैं। लेकिन उनमें वह सहृदयता व भावुकता नहीं है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

2) इसका कारण है गाँव में हीरा जैसे लोग पुनिया को पीट रहे हैं तो शहर में खन्ना जैसे अमीर भी गोविंदी को पीटते हैं मतलब महिलाओं के लिए समस्या आर्थिक न होकर सामाजिक है

3) गोबर जैसे शहरी मज़दूर भी ताड़ी के नशे में अपनी थकान उतारते हैं तो गाँव के किसानों की भी वही स्थिति है

4) गाँव में सुनिया, बिना विवाह गर्भधारण किए हुए हैं तो शहर में सरोज भी प्रेम विवाह हेतु विद्रोह कर रही है

वस्तुतः प्रेमचंद ने गोदान में संपूर्ण भारतीय समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया है

(ख) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मन्नू भंडारी नई कहानीकार हैं और इसी कारण उनकी कहानी यही सच है, में नई कहानी की शिल्प संबंधी विशेषताएँ ~~अभिव्यक्त~~ दृष्टिगोचर होती हैं

① भाषा

खड़ी बोली का प्रयोग किंतु अन्य भाषाओं के शब्दों का खुलकर प्रयोग। उदा० इंटरव्यू, प्लेटफॉर्म

② मनोविज्ञान की भाषा

चरित्रों के मनोविज्ञान को दिखाने के लिए प्रतीकों का प्रयोग ~~क~~ किया गया है। इस मनोविज्ञान में

भावुकता भाषा में झलकती है।
दीपा निशीथ से मिलने पर सोचती है—
"ओह! निशीथ कह दो कि तुम मेरे लिए ही यहाँ आए हो
यही एक सत्य है बाकि सब झूठ।"

③ इसके अलावा प्रतीक शहरीपन से उपजे लघुमानववाद व निरर्थकताबोध को भी परोक्ष रूप से उजागर करते हैं। उदाहरणतः ट्रेन का धीरे-धीरे आगे बढ़ना प्रेमी से मानसिक दूरी का प्रतीक है।

④ यह कहानी डायरी शैली में लिखी गई है जो कि एक नवाचार है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(5) चरित्र योजना के स्तर पर महज तीन ही चरित्र प्रमुख हैं - दीपा, संजय और निशीथ। पूरी कहानी इन्हीं के विशेषतः दीपा के मानसिक सत्य को उजागर करने पर केंद्रित है।

(6) कथानक प्रारंभ - मध्यक्रम - अंत की श्रृंखला को तोड़ता है।

(7) कथावस्तु के स्तर पर शहरी मध्यवर्गीय जीवन के बदलते संबंधों एवं निर्णय न लेने या मानसिक विचलन को दिखाया गया है।

इस प्रकार 'यही सच है' का शिल्प नई कहानी के तत्वों जैसे अजनबीपन, निरर्थकताबोध, पहचान के संकट, बदलते संबंधों को ~~अधि~~ वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने का माध्यम बना है।

(ग) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'दिव्या' मार्क्सवादी उपन्यासकार हैं अतः स्वाभाविक है कि इस उपन्यास में रचना करते समय मार्क्सवादी मूल्यों का प्रवेश हो।

कुछ समीक्षक मानते हैं कि 'दिव्या' मार्क्सवादी विचारधारा का दस्तावेज मात्र है लेकिन सूक्ष्म विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि इसमें मार्क्सवाद के मूल्य जरूर दिखते हैं लेकिन विचारधारा का प्रक्षेपण करने की कोशिश यशपाल की नहीं रही है।

दिव्या में मार्क्सवाद के मूल्य दो रूपों में मिलते हैं-

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रत्यक्ष

1) मार्क्सवाद के समान सामाजिक समानता का दर्शन। पुष्युसेन जातिगत विभाजन का विरोध करता है तो ~~[illegible]~~ मातंग वृकक जैसे लोग दास प्रथा को पाल रहे हैं।

2) नारी को महज वस्तु मानकर समाज का हर धार्मिक सम्प्रदाय या तो भोग करना चाहता है (~~[illegible]~~ या त्याज्य मानता है (बौद्ध धर्म)

3) यहाँ तक कि 'दिव्या' अपने पुत्र को दूध तक नहीं पिला पाती है।

4) वैदिक धर्म में नारी को केवल वंश बढ़ाने का साधन माना जाता है।

5) राज व्यवस्था पर उच्च वर्ग का ही अधिकार है। निम्न वर्ग का प्रेष शासक वर्ग में शामिल होकर

खुद शोषक बन जाता है।

[अप्रत्यक्ष]

(1.) युद्ध के समय व्यापारियों द्वारा अपना धन छिपाकर अन्य राज्यों में भेजना पूँजीवाद के Privatisation of Profit' का ही रूप है।

(2) इस प्रकार यशपाल 'दिव्या' में मार्क्सवादी विचारधारा के प्रक्षेपण का प्रयास नहीं करते हैं बल्कि नारी समस्या को दिखाने के प्रयास में ये मार्क्सवादी मूल्य प्रस्तुत हुए हैं क्योंकि मार्क्सवाद भी सामाजिक एवं लैंगिक समानता की बात करता है। उन्होंने प्राक्कथन में लिखा भी है - तुमको ....

निरंतर पराभव और ....

7. (क) आंचलिक होते हुए भी मैला आँचल अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'बूढ़ी काकी' कहानी वृद्धावस्था का मार्मिक अंकन करती है। इस कथन के परिप्रेक्ष्य में 'बूढ़ी काकी' की संवेदना पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'धनिया प्रेमचंद की सर्जनात्मक आँख है।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में धनिया का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) शिल्प की दृष्टि से 'कुटज' निबंध का विवेचन कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) ''महाभोज' उपन्यास के 'दा साहब' का चरित्र-चित्रण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दृष्टि
The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)